ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(4): 42-44
www.allresearchjournal.com
Received: 28-02-2021
Accepted: 30-03-2021

डॉ. विद्या शशिशेखर शिंदे
आय. सी. एस. कॉलेज खेड,
रत्नागिरी, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विद्या शशिशेखर शिंदे
आय. सी. एस. कॉलेज खेड,
रत्नागिरी, महाराष्ट्र, भारत

महात्मा फुलेजी के काव्य में जनक्रांती की चेतना

डॉ. विद्या शशिशेखर शिंदे

सारांश
महात्मा फुलेजी ब्रिटिश काल के जनक्रांती के जनक माने जाते हैं। पूरे विश्व में महात्मा फुलेजी समाजसुधारक के रुप में पहचानते हैं। लेकिन उन्होंने उस समय को पहचानकर समाज को जगाने के लिए काव्य की रचना भी उच्चतम रुप में की हैं। उनके समाज सुधार के सामने उनका कवि रुप पिछे रह गया। महिलाओं के लिए उनका कार्य सराहनीय हैं। अपनी पत्नी क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले के द्वारा शिक्षा का पवित्र कार्य आरंभ किया। इस काम के साथ साथ दूसरी तरफ निम्नवर्गीय समाज के लिए काव्य के माध्यम से शिक्षा के प्रति जागरुक करना आरंभ किया था। ब्रिटीश लोग शिक्षा के माध्यम से लोंगों में उच्च नीचता का भेदभाव कर रहे थे वह उन्हें पसंद नहीं था। तब उन्होंने अपने लोगों के मन के भीतर मानवता का एहसास जगाया। वर्तमान काल में भी इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में जागरुकता की जरुरत महसूस होती हैं।

उद्देश
1. महात्मा फुलेजी का साहित्य के क्षेत्र में योगदान प्रस्तुत करना।
2. उनके समाजसुधारक रुप के साथ साथ कवि के रुप में पहचान कराना।
3. उनकी कविता मानवतावादी चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं।
4. वर्तमान काल को भी उनकी कविताएं चेतावनी देती हैं।

कूटशब्दः समाजसुधारक, मानवतावादी चेतनाए, शिक्षा

प्रस्तावना
महात्मा फुलेजी का काल आधुनिक युग के आरंभ का माना जाता हैं। उसी समय हमारे देश में ब्रिटीश सत्ता के द्वारा शिक्षा के द्वार खुल रहे थे। लेकिन इसी काल में हमारे देश की सामाजिक परिस्थिति बहुत कष्टप्रद होती जा रही थी। अंधश्रद्धा, रुढि, परंपरा, जाति– भेद ऐसी अनिष्ट प्रथाएँ बहुत जोरों से चल रही थी। निम्नवर्गीय समाज में इन अनिष्ट प्रथाओं के कारण उच्च वर्ग के लोगों के माध्यम से शोषण किया जा रहा था। उस शोषण के विरोध में महात्मा फुलेजी ने अपनी लेखनी के माध्यम से चेतावनी देने का प्रयास किया। इस तरह का समाज उन्हें अपेक्षित नहीं था। ऐसे भारतीय समाज का दश्न उन्हें अंदर से बेचैन कर रहा था। निम्न स्तर का समाज गुलामी में जी रहा था। उन्हें उससे बाहर निकालकर नये समाज की निर्मिति करना उनके जीवन का ध्येय था। उनके लिए शिक्षा का द्वार खोलकर उनका विकास करना इसी मूलमंत्र को लेकर फुलेजी ने सत्यशोधक समाज का निर्माण किया। धर्मग्रंरचना यह कुछ स्वार्थप्रेरित होने के कारण वह समाज के हित में न होकर वह मानव–मानव के बीच जो असमानता का जो भेदभाव किया जा रहा था उसके विरोध में आवाज बुलंद कर दी। उन्होंने गद्य तथा पद्य दोनों में साहित्य की रचना की। उसके लिए उन्होंने काव्य के अंतर्गत पोवाडा,नाटक, अभंग, अखंड ऐसी रचनाओं के माध्यम से क्षुद्र मानव के मन में क्रांति की चेतना भरकर उन्हें मानव की उच्चता प्रदान करने का सफलतापूर्वक प्रयत्न किया।

काल की परिस्थिति का प्रभाव
महात्मा फुलेजी का काल पेशवे साम्राज्य का अस्त और ब्रिटीश सत्ता का आरंभ था। इस समय स्वाभाविक रुप से आधुनिक समाजव्यवस्था का निर्माण हो रहा था। ब्रिटीश लोग हमारे देश के ज्ञानी तथा श्रमिक लोगों की सहायता से राज्यकारभार चलाने लगे थें। उस समय हमारे देश की जनता अधिकतर अनपढ थे। शिक्षा प्राप्त लोग उच्चवर्णीय थे और श्रमिक वर्ग अज्ञानी था। ब्रिटीशों ने उन्हें गुलाम बनाया। महात्मा फुले जी ने इस गुलामी का विरोध करना आरंभ किया। सबसे पहले बिटिशों ने सबके उपर समान लगान लगा दिया। अज्ञानी और गरीब जनता इस अत्याचार को चुपचाप सहने लगी। अपने देश में रहकर विदेशीयों की गुलामी सहना यह फुलेजी को मान्य नहीं था।

ब्रिटिश अधिकारीयों के हाथ के नीचे काम करनेवाले अपने देश के उच्च वर्णीय थे। ये उच्च वर्णीय लोग अपने ही अज्ञानी जनता पर अत्याचार करने लगे। उन्हें लूटने लगे। इस बात का वर्णन करते हुए महात्मा फुले जी कहते हैं –

''सा–यासह फंड शुद्र किती देती।
धूर्त आर्य खाती। शाळा खाती।
शुद्रादिक त्यांनी किती शिकवले।
कामगार केले। दावा आम्हांला। [1]

इसका अर्थ यह हैं कि, लगान के साथ साथ अन्य फंड शुद्र लोगों से सबसे ज्यादा लिया जा रहा था। लेकिन हमारे देश के आर्य लोग इतने चालाक थे कि वह बीच में हडप कर रहे थे। स्कूल के नाम से गरीबों से धन लुट रहे थे। तब फुले जी उन्हें प्रश्न पुछते हैं कि,इन्होंने शुद्र लोगों को कितना पढाया और कितने लोगों को काम पर लगाया यह हमें दिखाओ। मतलब यह हैं कि ब्रिटिशों को अंधेरे में रखकर अंधाधुंद करनेवालों की तरफ संकेत करते हैं। शुद्र लोगों को पढाना उनकी परंपरा के खिलाफ था। वह जितने अनपढ रहेंगे उन्हें अच्छा महसुस होता था। ब्रिटीश काल में हमारे देश के सभी उच्च वर्णिय लोंग महत्वपूर्ण पद पर काम कर रहे थे। यह सब देखकर फुले जी अपने भाईजनों को क्रांति की चेतना देते हुए कहते हैं–

''तरुण शुद्रांनी विद्या संपादावी।
चाकरी धरावी शाळा खाती।
शाळेमध्ये कधी निवड नसावी।
मानवा शिकवी एक सहा।।
मुळी जातिभेद खुळास त्यागावे।
आर्या लाजवावे सत्कर्मी। [2]

इसका अर्थ यह हैं कि, फुलेजी अपने समाज को शिक्षा ग्रहण करने के लिए कहते हैं। पढ लिखकर स्कूल में अध्यापक की नौकरी करके अपने लोगों के भीतर आत्मविश्वास निर्माण कर सके। आनेवाली युवा पिढी आत्मचेतना प्राप्त कर सके। उस समय उच्च वर्णीय अध्यापक शुद्र लोंगों को पढाते नहीं थे। जातिभेद उनके रग में बसा हंआ था। ऐसे लोगों को आर्य कहकर पुकारते हैं। उन्हें शर्मिन्दगी महसुस हो ऐसा आचरण करने के लिए कहते हैं। यही परंपरा आगे चलकर छत्रपति शाहु महाराज ने अपनी कोल्हापूर संस्थान में सभी जातियों के लिए स्कूल तथा हॉस्टेल का आरंभ किया। महात्मा फुलेजी के विचार आनेवाले युग के लिए पथप्रदर्शक बन गये।

ब्रिटीशों ने उच्च वर्णीय शिक्षित भारतीय लोंगों के हाथ में अधिकार दिए थे। उन अधिकारों का गलत उपयोग करके वे अपने ही शुद्र लोगों के अज्ञान का लाभ उठाते हुए उनके उपर अन्याय कर रहे थे। एक तरफ चाहे जितना लगान जबरदस्ती से लेते थे और दूसरी तरफ ब्राहमण लोग ईश्वर के नाम पर लूट रहे थे। यह सब देखकर महात्मा फुलेजी सबको समान शिक्षा का अधिकार मिलने के लिए संघर्ष करते हुए कहते हैं –

मानव शिक्षक नेमा निर्विवाद।आर्या भेदाभेद। त्यागा सर्व।।
भटाचे शिक्षण खोटा धर्म सार। कृत्रिमाचे घर मुनिमत।। [3]

ठसका मतलब यह हैं कि, अगर शुद्र लोगों में आत्मविश्वास को जगाना है ती जातिभेद न करनेवाला इन्सान अध्यापक होना चाहिए । उच्च वर्णीय लोग शुद्र लोगों का तिरस्कार करते थे और उन्हें अछूत कहकर पुकारते थे। ऐसे लोगों को पढने लिखने का अधिकार नहीं हैं ऐसी उनकी सोच थी। इस तरह मानव मानव के बीच भेदाभेद करनेवाले लोग तथा धर्म के नाम पर झुठ बोलनेवाले लोगों में इन्सानियत नहीं होगी ऐसा स्पष्ट रुप में फुलेजी कहते हैं। शुद्र लोगों के बच्चों को स्कूल में अन्य बच्चों से दूर बिठाया जाता था। उनकी तरफ हीन दृष्टी से देखा जाता था। वर्तमान काल में भी शिक्षाव्यवस्था में जो भ्रष्टाचार दिखाई देता हैं उसका मूल कारण इसी व्यवस्था में छिपा हुआ दिखाई देता हैं। उच्च वर्णीय अध्यापक अपने बच्चों को जानबुझकर अधिक गुण देते थे और शुद्र वर्णीय लोगों के बच्चों को कम अंक देकर उन्हें अपमानित करते थे। जिसके कारण उनका आत्मविश्वास कम हो जाता था। वह अपने आपको हीन समझने लगते थे। ऐसे लोगों के मन के भीतर आत्मविश्वास जगाने का प्रयत्न फुलेजी ने किया। वह ऐसे लोगों पर व्यंग प्रहार करते हुए कहते हैं –

जगदृष्टे आर्य जातीचे कमीन।
करी अपमान। शुद्रांचा हो।
पवित्र इंग्रज भटा बडविती।
मोकळे सोडती। जोती म्हणे।। [4]

उच्च वर्णीय आर्य लोग हीन जाति के लोगों पर जो अत्याचार कर रहे थे उन्हें ब्रिटीश लोग पुण्यवान समझकर छोड देते थे। उनके खिलाफ कुछ सुनते नहीं थें। तब फुलेजी स्कूल के नियमों में कुछ सुधार बताते हुए कहते हैं –

सरकारी शाळा आधी शुद्र भरा।
भटोबास थारा देउ नका।
भटावत तुम्हीं शिक्षक बनावे।
त्यांना हटवावे। सत्यामध्ये।। [5]

महात्मा फुलेजी ब्रिटीशों को निर्भयतापूर्वक कहते हैं कि, सरकारी स्कूलों में शूद्र लोगों को अध्यापक के रुप में नियुक्त करना होगा। अपने लोगों को अधिकारपूर्वक कहते हैं कि, अध्यापक बनकर सच्चाई के मार्ग से आगे बढना और गलत आचरण करनेवालों को पिछे छोड देना होगा। हर मनुष्य ने पढलिखकर समानता का धर्म सीखना होगा। ज्ञान के दान में उच्च नीच ऐसा भेदभाव करना इन्सानियत के खिलाफ है यह बात उन्होंने इस तरह बतायी–

शुद्र मुली मुला। शाळेत घालावे।
सुशील करावे। सर्व कामी।। [6]

फुलजी कहते थे कि, सब शुद्र लोगोंने पढ–लिखकर विकास करना होगा और शिक्षा से ही अच्छा व्यक्तिमत्व निर्माण हो सकता है इसके उपर उनका विश्वास था। शुद्र लोगों के उपर उच्च वर्णीय लोग अन्याय कर रहे थे। इसका जवाब ज्ञान पाकर ही हम दे सकते हैं यह विचार फुलजी ने शुद्र लोगों के भीतर जगाते हुए कहते हैं –

शुद्राचे वंशज तुम्ही खरे खास।
दास जगतास। जोती म्हणे।। [7]

हम जन्म से शुद्र न होकर मानव हैं और सत्य का आचरण करनेवाले हैं। यही पूरे विश्व को दिखाना होगा यह आत्मीयता का भाव उनके काव्यद्वारा प्रकट होता हैं। दलित, उपेक्षित, शुद्र लोग अज्ञान के कारण पंडितों ने बताए ईश्वर, पोथी, पुराण तथा भविष्य के उपर विश्वास रखते हैं। ब्राहमण जो कहते हैं उन्हें प्रमाण मानकर चलते है उसका विरोध करते हुए फुलेजी कहते हैं –

परजातीवा तुम्ही सोपू नका।
बुडविता फुका धर्म मीषे।।
वडील धाकुटे स्नही उभयतांचे।

पंच स्वजातीचे निवडूनी।।
वर्ष वय गुण प्रीत परस्पर।
पाहा सारासार तपासूनी।। [8]

फुलेजी कहते थे कि, शुद्र लोग अपने जीवनविषयक महत्वपूर्ण निर्णय परजाती के उपर छोउ देते है यह सरासर गलत हैं। हमारे जीवन के निर्णय ब्रिटीश लोग या उच्च वर्णीय लोग कैसे ले सकते है? इसके अलावा अपने लोगों के भीतर पंच नियुक्त करके उनके पास यह जिम्मेदारी देनी होगी। जिससे यह आपसी प्रेमभाव से निर्णय ले सकते हैं। वर्तमान काल में अनेक जातियों के भीतर इस तरह की न्यायप्रक्रिया शुरु हैं इसका पूरा श्रेय फुलेजी के उस समय के विचारों को दिया जाता हैं। इतना ही नही तो शादी या त्याहार के मंगल प्रसंग को लेकर भी अपने ही जाति के लोग पंडित का काम सीखकर वह पूरा करें। धीरे धीरे इस प्रथा का भी प्रचलन शुरु हो गया। आगे चलकर इन्हीं विचारों से प्रेरित छत्रपती शाहु महाराज ने प्रत्यक्ष रुप में इसका आरंभ किया था। उस समय महात्मा फुलेजी ने फक्कड शब्दों में विरोध करते हुए कहा कि,

देवा प्रार्थुनिया घालवावी माळ।
मेळवुनी मेळ आनंदाचा।
ब्राहमणाचे येथे नाही प्रयोजन।
द्यावे हाकलूनी जोती म्हणे।। [9]

उच्च वर्णीय अपने आपको श्रेष्ठ, ज्ञानी, कुलवंत, धर्मनिष्ठ, पवित्र, उद्धारकर्ते ऐसा मानते है लेकिन आचरण इन सबसे उल्टा करते हैं। उन्होंने शुद्र लोगों के भीतर आत्मविश्वास जगाया। उच्च वर्णीयों ने शुद्र लोगों को डराया, घबराया और ईश्वर के नाम पर अंधविश्वास को जगाया। वह युग युग से अज्ञानी लोगों को ठगते रहे। इसके बारे में महात्मा फुलेजी कहते हैं –

भोळया भाविकाला ठक फसवितो।
अधोगती जाती जोती म्हणे।। [10]

उच्च वर्णीय लोगों को ठग कहकर पुकारा और ऐसे लोग सद्गती प्राप्त नहीं कर सकते यह भी स्पष्ट शब्दों में कह दिया। उस समय के शुद्र वर्ग को चेतावनी देते हुए फुलेजी कहते हैं–

सत्तेवाचून सकळ कळा, झाल्या अवकळा, पुसा मनाला।।
गोडी आर्जवाची लागली, लाज सोडली, पडता पाया।। [11]

आज शुद्र लोगों की जो दशा हो गयी है उसका कारण आज आपके हाथ में राजकीय, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सत्ता नहीं हैं। अपना साम्राज्य न होने के कारण यह दूर्दशा हो गयी हैं। इसी के कारण हमारा स्वाभिमान भी कुचला जा रहा हैं। उच्च वर्णीयो के सामने लाचारी से झुकने के बावजूद पेटभर खाना भी नसीब नहीं हैं। काम करने के बदले में अपमान और तिरस्कार मिलता हैं। इससे बाहर आने के लिए हमें अपने स्वाभिमान को जगाना जरुरी हैं। शुद्र लोगों ने इसके लिए पढ लिखकर समानता का धर्म सीखना होगा। उसके लिए उन्होंने चेतावनी देने का प्रयास किया।

निष्कर्ष

अज्ञान के अंधःकार में भटकनेवाले भारतीय बहुजन समाज के भीतर आत्मविश्वास जगाने के लिए महात्मा फुलेजी ने अपना जीवन समर्पित किया। इसी कारण उच्च वर्णीयों ने उन्हें बहुत परेशान किया फिर भी वह अपने कार्य में अटल रहें। उन्होंने सत्यधर्म को समाज में फैलाया इसी वजह से विरोधी लोगों ने फुले जी के बारे में गलत प्रचार करने लगे थे। लेकिन आजीवन वह सत्यशोधक समाज का निर्माण में लगे रहे हैं। आज महात्मा फुले जी समाजसुधारक के रुप में समाज में मान्यता प्राप्त हो गये। लेकिन वह एक श्रेष्ठ कवि भी थे। आज की युवा पिढी के लिए उनकी कविताएँ प्रेरणादायी साबीत हो रही हैं। वर्तमान काल में भी जातिभेद, वंशभेद, धर्मभेद, वर्णभेद की दीवारें जनमानस को उखाडने पर तुली हुई हैं। आज शिक्षाव्यवस्था में भी जो अनाचार फैला हुआ हैं उसे रोकने का साहस फुले जी की कविताओं में स्पष्ट झलकता हैं। आज उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण हो रहा हैं। आज पढे लिखे लोग भी अन्याय चुपचाप सह रहे हैं। ऐसे लोगों के भीतर चेतावनी तथा आत्मप्रेरणा जगाने का प्रयास महात्मा फुलेजी के काव्य में दिखाई देता हैं। आज तक जितने भी महात्मा इस जगत् में अवतरित हुए उसमें फुलेजी का नाम आज भी उतना ही वंदनीय तथा पूजनीय हैं। इन्होंने लिखा हुआ काव्य आज भी हमारे लिए पथप्रदर्शक हैं। यह मेरा विश्वास हैं। इनका काव्य दर्शन इतना विशाल हैं कि इसे सभी ने पढकर अपने अंदर की चेतावनी को जगाना होगा।

संदर्भ

1. महात्मा फुले समग्र 1991 – य. दी. फडके– पृष्ठ 568
2. वही पृष्ठ 568
3. वही पृष्ठ 568
4. वही पृष्ठ 569
5. वही पृष्ठ 569
6. वही प्ष्ठ 569
7. महात्मा फुले 2005 –चौधरी कृष्णा पृष्ठ 95
8. वही प्ष्ठ 96
9. वही प्ष्ठ 97
10. वही प्ष्ठ 570
11. वही प्ष्ठ 538
12. महात्मा फुले जनक्रांति के जनक–धनंजय कीर